

Joh 15:1

Ἐγώ | εἰμι \ ἡ ἄμπελος
| ἡ ἀληθινή

καὶ ὁ πατήρ | ἐστίν. \ ὁ γεωργός
| μου

Joh 15:2

| αἶρει | αὐτό = κλῆμα
| πᾶν
| ἐν ἐμοὶ
| φέρον | καρπὸν
μὴ

καὶ | καθαίρει | αὐτό = τὸ
| πᾶν
| φέρον | καρπὸν
| ἵνα
| φέρη. | καρπὸν
| πλείονα

Joh 15:3

ὕμεις | ἐστε \ καθαροί
| ἤδη
| διὰ τὸν λόγον
| λελάληκα | ὄν
| ὑμῖν

Joh 15:4

μείνατε
|
| / εν ἐμοί

κάγὼ |
| / εν ὑμῖν.

καθὼς τὸ κλήμα | δύναται
|
| οὐ || φέρειν | καρπὸν
| / ἀφ' ἑαυτοῦ
|
| ἐὰν μὴ
|
| μένη
| / εν τῇ ἀμπέλῳ

οὐδὲ ὑμεῖς |
| οὕτως
| ἐὰν μὴ
| μένητε.
| / εν ἐμοί

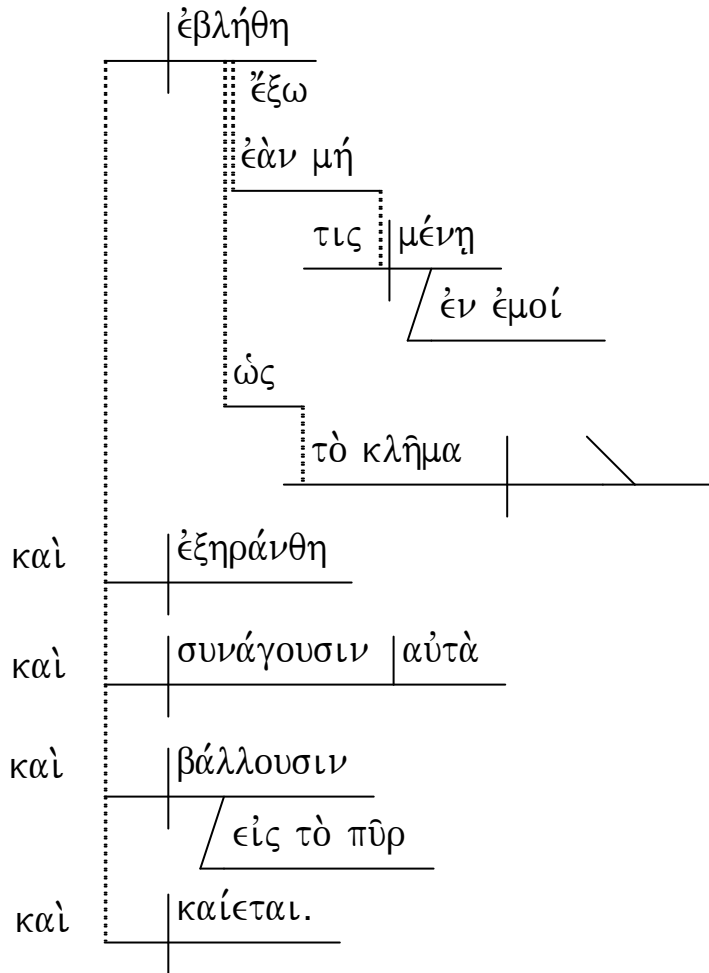
Joh 15:5

ἐγὼ | εἶμι \ ἡ ἄμπελος

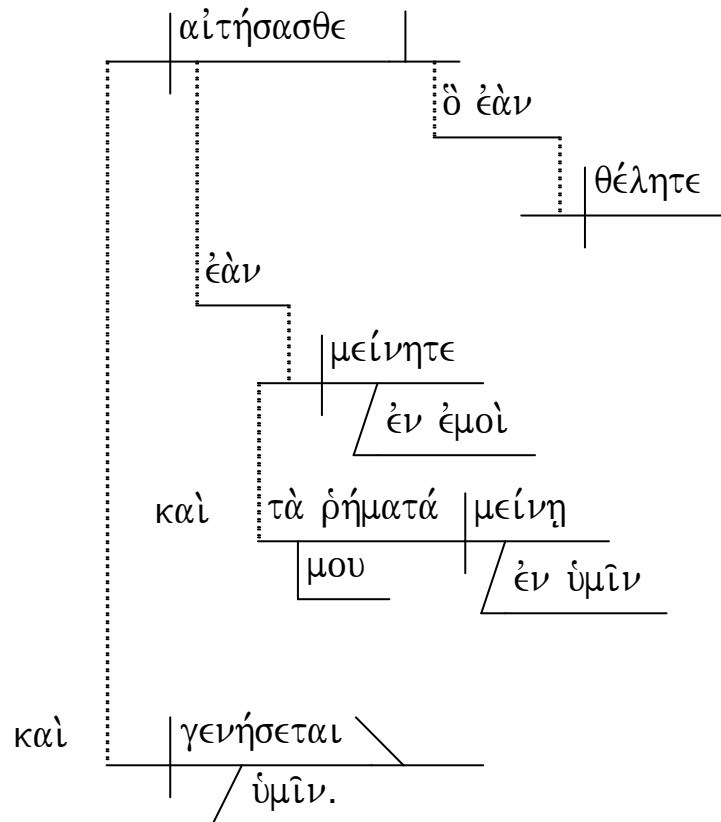
ὑμεῖς | \ τὰ κλήματα.

οὗτος | φέρει | καρπὸν
| | |
| ὁ μένων | | πολύν
| / εν ἐμοί
|
| οὐ || ποιεῖν | οὐδέν.
| / χωρὶς ἐμοῦ
|
| ἐν αὐτῷ | δύνασθε
| | οὐ || ποιεῖν | οὐδέν.
| / χωρὶς ἐμοῦ

Joh 15:6



Joh 15:7



Joh 15:8

ὁ πατήρ | ἔδοξάσθη
μου | / ἐν τούτῳ
ἵνα
φέρητε | καρπὸν
γένησθε | μαθηταί.
/ ἐμοὶ